प्रिय आत्मन्,

आपको भगवान ने ढूँढा और तुमने फिर से अपना हाथ उससे छुड़ा दिया। क्या तुमने उसे पहचाना नहीं कि यही हमारा पिता है, परमात्मा आत्मा का पिता तो वह किसी के शरीर में तो आयेगा ही बिना शरीर के वह नॉलेजफुल कैसे आकर नॉलेज दिया होगा, बिना दिये तो नॉलेजफुल कहलायेगा नहीं। आखिर किस समय दिया होगा? आपको अगर अभी तक यह बात समझ में नहीं आयी तो आप दूसरों को क्या समझाते थे अगर आई थी तो क्लास में आना क्यों छोड़ दिया, पढ़ाई क्यों छोड़ी? पढ़ाई छोड़ी माना शिवबाबा का हाथ छोड़ा? क्या हुआ जो आप दूसरों को पार लगाने की बातें बताते थे और आज खुद ही डूबने की राह पकड़ ली? तकदीरवान बनते-बनते बदनसीब क्यों बनने चल दिये। कल तक आप अपने लक्ष्य व पुरुषार्थ के बारे में व सेवाओं के बारे में क्या-क्या बातें करते थे और आज आपको क्या हुआ जो खुद ही भटक गये? मेरे भाई क्या सन्देश देने का कार्य पूरा हो गया है या सतयुग आ गया है? या दुनिया से अवगुणों का सफाया हो गया है विश्व नव-निर्माण का कार्य पूरा हो गया है जो अपने आराम करने की सोच लिया है। क्या सिर्फ आप अब स्वार्थ के लिए जीना चाहेंगे या सिर्फ परिवार के लिए ही जीने का मकसद बना लिए हैं?

आप सारे संसार को मदद कर सकते हो फिर एक निम्न हद की सीमा क्यों बना रखी, आप इतना कर सकते हैं जिससे लाखों का भला हो सकता है फिर आप पीछे क्यों हट रहे हो? क्या दुनिया के दु:ख-दर्द सब समाप्त हो गये हैं या आपको किसी के दु:ख दिखाई नहीं देते या आपको किसी की भावनायें फील नहीं होती? या आपकी सारी शक्ति समाप्त हो गयी है या आपमें दिलशिकस्ती आ गयी हैं या समय की पुकार आपको सुनाई नहीं देती या माया में इतनी शक्ति आ गई है जो आप जैसे दृढ़ निश्चयी, अति आत्म-विश्वासी, प्रबल पुरुषार्थी हिम्मतवानों का भी रास्ता चट्टानों की तरह रोककर आपको अपने चम्बे में फंसा लिया है। कमाल है माया की कि जिसको दुनिया न पहचान सकी उस भगवान को जिसने परख लिया, पहचान लिया और माया ने ऐसा रूप बनाया कि उसको नहीं पहचान पाये। भैय्या माया रावण दुश्मन के रूप में नहीं साधू के रूप में आती है, सोने के हिरन के रूप में आती है क्या आपकी परख शक्ति इतनी ढीली हो गयी है? मेरे भाई आपने भगवान को किस लिए छोड़ा भगवान ने तो कभी परिवार, पढ़ाई, नौकरी छोड़ने के लिए कहा नहीं बैलेंस रखने के लिए ही कहा है। क्या आपने अधिक धन कमाने के लिए, या किसी के डर से या किसी से नाराज होकर या फिर माया से दोस्ती कर ली है या विकारी जीवन जीने की इच्छा करने लगे हो?

भैया पैसा बहुत कुछ है पर सबकुछ नहीं, और भगतसिंह, गांधी जी, सुभाष, तिलक ये सब धन के पीछे भागते तो भारत इस हालत में होता क्या? या पैसे सर्व सुख देता तो राजा भर्तहरि, गोपीचन्द, सिद्धार्थ (महात्मा बुद्ध) अपना राज्य न छोड़ा होता, मेरे भाई भगवान इन सबसे बहुत बड़ा है और आपका जन्म इतने छोटे उद्येश्य के लिए नहीं हुआ है तुम अपनी तो क्या लाखों की जीवन नैया पार लगा सकते हो। तुम कहाँ फंस गये हो, और क्यों उलझ कर और फंसते जा रहे हो तुम्हारी मंजिल ये नहीं, तुम्हारा लक्ष्य इतना छोटा क्यों? तुमने इतनी जल्दी घुटने क्यों टेक दिये? तुम सर्वशक्तिवान की

सन्तान मा. सर्व शक्तिवान हो, तुममें अदम्य शक्ति है तुम्हें तो अभी बहुत विकराल बहुत विशाल परिस्थितियों का सामना करना होगा, और तुम तो छोटी-छोटी सी बातों से इतना घबरा गये कि पढ़ाई ही छोड़ दी। अरे सोचो तुमने कौन सी पढ़ाई छोड़ी है? परीक्षायें तो सभी पढ़ाई में होती हैं क्या तुम परीक्षा से घबराने वाले स्टूडेन्ट हो? नहीं, तुम एक बहादुर सैनिक हो जो युद्ध से भी नहीं घबराते, तो परीक्षा उसके आगे क्या है?

हमने एक बार पढ़ा था कि चींटी हाथी को मार देती है पर आश्चर्य कहाँ हाथी कहाँ चींटी, अगर हाथी सिर्फ उसके ऊपर पैर ही रख दे तो चींटी का कुछ भी पता नहीं लगेगा। पर शायद हाथी यह कोशिश ही नहीं करता, कहीं आप भी तो ऐसा ही नहीं कर रहे हैं? अरे भैया भगवान के मिलने के बाद भी आपकी ऐसी ही हालत रही तो दुनिया का क्या होगा? अगर आज आपने कुछ नहीं किया तो आखिर कब करोगे? जब भ्रष्टाचार, पाप, अनैतिकता लाइलाज हो चुका होगा, नहीं तुम इतने स्वार्थी नहीं हो सकते जो सिर्फ अपने लिए सोचो, तुम्हें दूसरों को जीवन देते व जीवन बनाने के लिए जीना है पैसे से जीवन नहीं बनता। ब्रह्मा बाबा, दादी प्रकाशमणी, दादी जानकी, दादी गुल्जार, जगदीश भाई पैसे से नहीं बने थे न ही मदर टेरेसा, गांधी जी, सुभाष, विवेकानंद, भगतसिंह आदि लोग पैसे से बनाये जा सकते हैं। अगर हमारे पास अभी समय भगवान के लिए नहीं है तो आगे चल कर भगवान के पास हमारे लिए समय नहीं होगा तब तक उसको बहुत मिल चुके होंगे, देखो उसने आपको ढूँढा और आप उसका हाथ छोड़ कर किसी और के बन गये, क्या भगवान से शक्तिशाली उससे ज्यादा मददगार रहमदिल, स्नेह का सागर, वफादार, ईमानदार आपको कोई और मिल गया है?

अभी भगवान ऑफर कर रहा है और आप किस सोच में हैं? क्या भगवान का बनने से आपका कोई नुकसान हो गया है या आपको कोई संशय आ गया है या किसी के कोई बात हो गयी है तो भैया मेरे ये आपका घर है आपके पिता का घर है आप खुले हृदय से अपनी बात कर सकते हो, दूसरा सभी पुरुषार्थी हैं सभी में कमियाँ हैं किसी से कोई गल्ती हो गयी तो उसे छोटा समझ माफ कर देने में ही हम सबकी भलाई है और आप लोग ज्यादा समझदार हैं इसलिए किसी भी छोटी बात के पीछे अपने अनमोल समय व अनमोल कमाई को क्यों गँवायें?

आप की बहन होने के कारण यह हमारा कर्तव्य है कि हम आप का भला चाहें, इसलिए हमने आपको यह पत्र लिखा, हमारा आपसे नम्र निवेदन है कि आप सब कुछ भूल, अपना वर्सा न पढ़ाई व पुरुषार्थ करने के लिए एक बार पुन: पधारे, आपका अपने घर में सदा स्वागत है। अगर कोई हमसे गल्ती हुई हो जो आपको फील हुआ जिस कारण आपने पढ़ाई छोड़ी तो उसके लिए हम आपसे माफी मांगते हैं हमें क्षमा कर दीजिएगा, भगवान से वर्सा लेने में हमने आपके सामने बाधा खड़ी की भगवान शायद हमें कभी माफ नहीं करेगा पर आप हमारी अल्पज्ञता पर जरुर रहम करेंगे और पुन: आप नये उमंग-उत्साह से पुरुषार्थ में तत्पर होंगे ऐसी हमें आपसे आशा व पूर्ण विश्वास है कि आप अपना भाग्य श्रेष्ठ बनायेंगे। परिवार में आपसे सभी को बहुत ही उम्मीदें हैं निश्चय ही आप सबकी उम्मीदों को पूरा करने के लिए फिर से शिवबाबा का हाथ पकड़ेंगे। आपके आने का हम सबको इन्तजार हैं।